

## वैश्विक सांगमिक मोक्ष के सन्दर्भ में दार्शनिक समरूपता

■ डॉ० चन्द्रमा सिंह

विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग  
किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय,  
रकसा, रतसड़, बलिया

भारतीय दर्शन के प्रत्येक सम्प्रदाय का अन्तिम लक्ष्य आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति है— एक ऐसी अवस्था की प्राप्ति जिसमें कि समस्त दुःखों का अवसान हो जायेगा। इस अवस्था को विभिन्न दर्शनों में अलग-अलग नाम दिये हैं किन्तु सामान्यतः मोक्ष, मुक्ति, अपवर्ग, कैवल्य, निर्वाण आदि शब्द इसी अवस्था को द्योतित करते हैं। जबकि जन्म-मरण के चक्र का सदैव के लिए विराम होकर दुःखों का समूल उच्छेदन हो जायेगा।

मोक्ष प्राप्ति हो जाने पर जीवात्मा की क्या अवस्था होगी? वह अपने स्वरूप में स्थित हो जायेगा या ब्रह्मरूप हो जायेगा या वह अज्ञान नष्ट हो जाने से स्वयं ब्रह्म ही हो जायेगा अथवा यह विज्ञान सन्तति निर्वाण होते ही अस्तित्व विहीन हो जायेगा? मोक्ष या निर्वाण की स्थिति आनन्दपूर्ण है या समस्त प्रकार के अनुभवों से रहित है। इन प्रश्नों के उत्तर में दर्शनों के भिन्न-भिन्न मत हैं। मोक्ष के स्वरूप के विषय में मतभेद होते हुए भी इतना निर्विवाद है कि एक स्थिति ऐसी अवश्य है, जिसको पाने के लिए तत्त्वज्ञान की प्राप्ति आवश्यक है तथा दीर्घकाल तक निश्चित साधना पद्धति का अवलम्बन अपेक्षित है। उस स्थिति को पा लेने पर पुनः जन्म-मरण के बन्धन में नहीं आना होगा, इसलिए दुःख भी अनिवार्यतः सदैव के लिए समाप्त हो जायेंगे।

डा० धर्मेन्द्र शास्त्री ने लिखा है कि प्रत्येक भारतीय दर्शन अपने प्रतिपाद्य विषय में मोक्ष को उद्देश्य मानकर प्रवृत्त होता है। भारतीय दर्शन की इस प्रवृत्ति पर कतिपय पाश्चात्य आलोचकों का आक्षेप है कि भारतीयों की प्रवृत्ति निराशावादी रही है तथा वे इस लोक को छोड़कर परलोक तथा किसी दूसरी दुनिया की ओर अभिमुख रहे हैं। मोक्ष का अर्थ है— मानव जीवन की भौतिक परिस्थितियों के बन्धन से, जिनमें मनुष्य जकड़ा हुआ है— छूट जाना यह मनुष्य के जीवन का भौतिक आवश्यकताओं से परे एक ऐसा अलौलिक आदर्श है, जो कि प्रत्येक प्रतिभाशाली मनुष्य के अन्दर सब देशों और सब कालों में पाया जाता है केवल भारत के दार्शनिकों ने इसको स्पष्ट और निश्चित रूप से समझकर इसे दर्शन शास्त्र का लक्ष्य माना था।

डा० दासगुप्त का कथन है कि वास्तव में भारत में एक बड़ी गहन धार्मिक अभिलाषा रही है कि मनुष्य परम मोक्ष को प्राप्त करे और आत्मानुभूति का आनन्द उठाये— इसी भावना के चक्र से छूटकर मोक्ष की प्राप्ति भारतीय दर्शनों का अन्तिम लक्ष्य है तथा इसी ओर उनकी प्रमुख प्रवृत्ति है।

जैन दर्शन में मोक्ष का तात्पर्य है जीव की अजीव से मुक्ति। बन्ध के कारणों के अभाव होने पर तथा संचित कर्मों की निर्जरा होने से समस्त कर्मों का समूल उच्छेद होने पर जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष आत्मा की शून्यावस्था नहीं है वरन् उस परम आनन्द में उसका प्रवेश है, जिसका अन्त नहीं है। यह शरीर से वियोग तो है किन्तु में लम्बी व छोटी, न काली न नीली न कडुवी, न तीखी, न ठण्डी न गरम होती है। शरीर-रहित, पुनर्जन्म से भी रहित, वह देखती है, जानती है, किन्तु उसका सादृश्य कुछ भी नहीं है। जिसके द्वारा मुक्तात्मा के स्वरूप को जाना जा सके।

बौद्ध दर्शन के सभी सम्प्रदाय निर्वाण का प्रतिपादन करते हैं। सामान्यतः निर्वाण के विषय में इस प्रकार की धारणा है कि शब्दों के द्वारा निर्वाण का निर्वचन नहीं किया जा सकता। यह असंस्कृत धर्म है। अतः न तो इसकी उत्पत्ति है, न विनाश है, न परिवर्तन है। इसकी अनुभूति अपने ही अन्दर स्वतः की जा सकती है। इसी कारण इसे प्रत्यात्मेव कहा गया है। अष्टांग मार्ग के द्वारा निर्वाण की प्राप्ति होती है। निर्वाण में व्यक्तित्व का सर्वथा विरोध हो जाता है।

न्याय सूत्रों में दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति को 'अपवर्ग' कहा गया है। सभी प्रकार के दुःखों की सदैव के लिए समाप्ति अपवर्ग या मोक्ष है। तत्त्वज्ञान के द्वारा जब मिथ्याज्ञान नष्ट हो जाता है तो राग द्वेष आदि दोष दूर हो जाते हैं। दोषों की समाप्ति होने से जन्म या बन्धन भी समाप्त हो जाता है। जन्म-मरण का चक्र टूट जाने

से दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति हो जाती है। यही स्थिति अपवर्ग या मोक्ष है। वैशेषिक सूत्र में कहा गया है कि सभी प्रकार के कर्मों की समाप्ति पर आत्मा का शरीर से सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है। जन्म-मरण के चक्र की भी समाप्ति हो जाती है तथा सभी दुःख अनन्त काल के लिए नष्ट हो जाते हैं। यही मोक्ष है।

पुरुष का प्रकृति के साथ संयोग बन्धन है तथा वियोग मोक्ष है। पुरुष तथा प्रकृति के भेद का ज्ञान जब तक नहीं होता तब तक बन्धन की स्थिति रहती है, भेद ज्ञान हो जाने पर मोक्ष प्राप्ति हो जाती है। जिस प्रकार नर्तकी दर्शकों का मनोरंजन करके रंग गंध से निवृत्त हो जाती है उसी प्रकार विवेक ज्ञान होने के तुरन्त बाद ही पुरुष पूर्णतः मुक्त नहीं हो जाता। जब प्रारब्ध कर्म भी समाप्त हो जाते हैं, तब यह शरीर छूट जाता है तथा नित्य कैवल्य प्राप्त हो जाता है। अष्टांग योग के अभ्यास से कैवल्य-प्राप्ति होती है। निरन्तर योगाभ्यास के द्वारा बुद्धि शुद्ध हो जाती है, तब वह प्रकृति में लय होने लगती है, जहाँ से उसका विकास हुआ था। पुरुष को यह ज्ञान हो जाता है कि मन आदि से उसका सम्बन्ध अज्ञान पर आधारित था। उस सम्बन्ध के समाप्त होते ही पुरुष को कैवल्य प्राप्त हो जाता है।

यद्यपि जैमिनी तथा शबर ने मोक्ष के विषय में विचार नहीं किया है, किन्तु परवर्ती मीमांसक मोक्ष का विवेचन करते हैं। प्रभाकर के मत में धर्म तथा अधर्म के सर्वथा नष्ट हो जाने का नाम मोक्ष है। धर्म तथा अधर्म का पुनर्जन्म का कारण बनते हैं। अतः इनकी पूर्णतः समाप्ति मोक्ष-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। धर्म तथा अधर्म का विलोप हो जाने के कारण जो शरीर की समाप्ति है, वही मोक्ष है। केवल ज्ञान से मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती, कर्म भी सर्वथा समाप्ति से ही मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष सुख-दुःख आदि से पूर्णतः रहित अवस्था है। ज्ञानयुक्त कर्म मोक्ष-प्राप्ति में सहायक होते हैं। शंकराचार्य मोक्ष के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "यह परमार्थ है, कूटस्थ, नित्य है, आकाश के समान सर्वव्यापी है, सभी विकारों से शून्य है, नित्य तृप्त है, अवयवों से रहित है, स्वभाव से स्वयंप्रकाश है, यह ऐसी स्थिति है जहाँ तक पाप और पुण्य अपने कार्य के साथ त्रिकाल में भी नहीं पहुँच सकते। अविद्या का नाश होने पर जीवात्मा स्वतः प्रकाशित हो जाता है, जैसे मालिन्य से रहित होने पर स्वर्ण अपनी स्वाभाविक चमक को प्राप्त कर लेता है अथवा जैसे- बादलों से रहित आकाश में रात्रि में नक्षत्र प्रकाशित होते हैं। मोक्ष की अवस्था में आत्मा अपने यथार्थ स्वरूप को धारण कर लेता है। मोक्ष कोई उत्पन्न वस्तु नहीं है। यदि वह कर्म द्वारा उत्पन्न वस्तु होती तो उसके लिए किसी शारीरिक, वाचिक या मानसिक क्रिया की आवश्यकता पड़ती। परन्तु इनमें से कोई भी क्रिया किसी नित्य वस्तु की उत्पत्ति नहीं कर सकती। प्रत्येक उत्पन्न वस्तु नाशवान् है। मोक्ष को नाशवान् नहीं माना जा सकता, इसलिए वह उत्पन्न वस्तु भी नहीं है। मोक्ष विकार भी नहीं है। यदि वह विकार होता तो वह नित्य नहीं हो सकता था। संसार में कोई भी विकार नित्य नहीं होता। अतः कर्म से मोक्ष प्राप्ति नहीं होती, केवल तत्त्वज्ञान से ही मुक्ति होती है। आत्मज्ञान के उदय होने के उपरान्त मोक्ष प्राप्त हो जाता है, किन्तु शरीर कुछ समय तक बना रहता है। यह जीवन मुक्ति की दशा है। जिस प्रकार पूर्ण वेग संस्कार के कारण कुम्हार का चक्र चलाना बन्द कर देने पर भी कुछ देर तक चलता रहता है, इसीप्रकार पूर्व संस्कारवश कुछ समय तक शरीर बना रहता है, उसकी भी समाप्ति हो जाने पर विदेह मुक्ति हो जाती है। मोक्ष के स्वरूप का विवेचन भी विवादस्पद विषय है किन्तु पूर्णतः दुःख निरोध की एक शाश्वत अवस्था के रूप में मोक्ष का अस्तित्व इन सभी दर्शनों में स्वीकृत है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० धर्मन्द्र नाथ शास्त्री, भारतीय दर्शन
2. डॉ० एस०एन० दासगुप्त, भा०द०इति०, भाग-1
3. डॉ० राधाकृष्णन्, भा०द० भाग-1
4. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपाध्याय